عِبَادِهٖ ۚ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۵﴾ ع

में गुज़र चुका[181] और वहां काफ़िर घाटे में रहे[182]

اٰيَاتُهَا ۵۴ (۴۱) سُوْرَةُ حٰمٓ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ (۶۱) رُكُوْعَاتُهَا ۶

सूरए حٰمٓ السجده मक्किय्या है, इस में चव्वन आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह्म वाला[1]

حٰمٓ ۚ ﴿۱﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۚ ﴿۲﴾ كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا

येह उतारा है बड़े रह्म वाले मेहरबान का एक किताब है जिस की आयतें मुफ़स्सल फ़रमाई गईं[2] अ़रबी

عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۙ ﴿۳﴾ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ

क़ुरआन अ़क़्ल वालों के लिये ख़ुश ख़बरी देता[3] और डर सुनाता[4] तो उन में अक्सर ने मुंह फेरा तो वोह

لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿۴﴾ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْۤ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَاۤ اِلَيْهِ وَفِيْۤ اٰذَانِنَا

सुनते ही नहीं[5] और बोले[6] हमारे दिल ग़िलाफ़ में हैं उस बात से जिस की त़रफ़ तुम हमें बुलाते हो[7] और हमारे कानों में

وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ﴿۵﴾ قُلْ اِنَّمَاۤ

टेंट (रूई) है[8] और हमारे और तुम्हारे दरमियान रोक है[9] तो तुम अपना काम करो हम अपना काम करते हैं[10] तुम फ़रमाओ[11] आदमी

اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰۤى اِلَيَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْۤا اِلَيْهِ

होने में तो मैं तुम्हीं जैसा हूं[12] मुझे वह्य होती है कि तुम्हारा मा'बूद एक ही मा'बूद है तो उस के हुज़ूर सीधे रहो[13]

181 : येही है कि नुज़ूले अ़ज़ाब के वक़्त ईमान लाना नाफ़ेअ़ नहीं होता उस वक़्त ईमान क़बूल नहीं किया जाता और येह भी **अल्लाह** तआ़ला की सुन्नत है कि रसूलों के झुटलाने वालों पर अ़ज़ाब नाज़िल करता है। **182 :** या'नी उन का घाटा और टोटा अच्छी त़रह़ ज़ाहिर हो गया। **1 :** इस सूरत का नाम "सूरए फ़ुस्सिलत" भी है और "सूरए सज्दह व सूरए मसाबीह़" भी है, येह सूरत मक्किय्या है, इस में छ[6] रुकूअ़ चव्वन आयतें और सात सो छियानवे कलिमे और तीन हज़ार तीन सो पचास ह़र्फ़ हैं। **2 :** अह़काम व इम्साल व मवाइज़ व वा'दो वई़द वग़ैरा के बयान में। **3 : अल्लाह** तआ़ला के दोस्तों को सवाब की। **4 : अल्लाह** तआ़ला के दुश्मनों को अ़ज़ाब का। **5 :** तवज्जोह से क़बूल का सुनना। **6 :** मुश्रिकीन। ह़ज़रत नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से। **7 :** हम उस को समझ ही नहीं सकते या'नी तौह़ीद व ईमान को। **8 :** हम बहरे हैं आप की बात हमारे सुनने में नहीं आती, इस से उन की मुराद येह थी कि आप हम से ईमान व तौह़ीद के क़बूल करने की तवक़्क़ोअ़ न रखिये, हम किसी त़रह़ मानने वाले नहीं और न मानने में हम ब मन्ज़िला उस शख़्स के हैं जो न समझता हो न सुनता हो। **9 :** या'नी दीनी मुख़ालफ़त। तो हम आप की बात मानने वाले नहीं। **10 :** या'नी तुम अपने दीन पर रहो हम अपने दीन पर क़ाइम हैं या येह मा'ना हैं कि तुम से हमारा काम बिगाड़ने की जो कोशिश हो सके वोह करो हम भी तुम्हारे ख़िलाफ़ जो हो सकेगा करेंगे। **11 :** ऐ अक्रमुल ख़ल्क़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم बराहे तवाज़ोअ़ उन लोगों के इर्शादात व हिदायात के लिये कि **12 :** ज़ाहिर में कि मैं देखा भी जाता हूं मेरी बात भी सुनी जाती है और मेरे तुम्हारे दरमियान में ब ज़ाहिर कोई जिन्सी मुग़ायरत (तब्दीली) भी नहीं है तो तुम्हारा येह कहना कैसे सह़ीह़ हो सकता है कि मेरी बात न तुम्हारे दिल तक पहुंचे न तुम्हारे सुनने में आए और मेरे तुम्हारे दरमियान कोई रोक हो, बजाए मेरे कोई ग़ैर जिन्स

www.dawateislami.net

وَاسْتَغْفِرُوْهُ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ۙ﴿۶﴾ الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ

और उस से मुआफ़ी मांगो[14] और ख़राबी है शिर्क वालों को वोह जो ज़कात नहीं देते[15] और

هُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۷﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

वोह आख़िरत के मुन्किर हैं[16] बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये

لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿۸﴾ؑ قُلْ اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ ع ۸ ۱۵

उन के लिये बे इन्तिहा सवाब है[17] तुम फ़रमाओ क्या तुम लोग उस का इन्कार रखते हो जिस ने दो दिन

فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗۤ اَنْدَادًا ؕ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۹﴾ج وَجَعَلَ

में ज़मीन बनाई[18] और उस के हमसर ठहराते हो[19] वोह है सारे जहान का रब[20] और इस में[21]

فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَاۤ اَقْوَاتَهَا فِيْۤ اَرْبَعَةِ

इस के ऊपर से लंगर (भारी बोझ) डाले[22] और इस में बरकत रखी[23] और इस में इस के बसने वालों की रोज़ियां मुक़र्रर कीं येह सब मिला कर चार

اَيَّامٍ ؕ سَوَآءً لِّلسَّآئِلِيْنَ ﴿۱۰﴾ ثُمَّ اسْتَوٰۤى اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ

दिन में[24] ठीक जवाब पूछने वालों को फिर आस्मान की त़रफ़ क़स्द फ़रमाया और वोह धूआं था[25] तो उस

"जिन्न या फ़िरिश्ता" आता तो तुम कह सकते थे कि न वोह हमारे देखने में आएं न उन की बात सुनने में आए न हम उन के कलाम को समझ सकें हमारे उन के दरमियान तो जिन्सी मुख़ालफ़त ही बड़ी रोक है, लेकिन यहां तो ऐसा नहीं क्यूं कि मैं बशरी सूरत में जल्वा नुमा हुवा तो तुम्हें मुझ से मानूस होना चाहिये और मेरे कलाम के समझने और इस से फ़ाएदा उठाने की बहुत कोशिश करना चाहिये क्यूं कि मेरा मर्तबा बहुत बुलन्द है और मेरा कलाम बहुत आ़ली है, इस लिये कि मैं वोही कहता हूं जो मुझे वह्य होती है। **फ़ाएदा :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का ब लिहाज़े ज़ाहिर "اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ" फ़रमाना हिक्मते हिदायत व इर्शाद (रुश्दो हिदायत की हिक्मत) के लिये ब त़रीक़े तवाज़ोअ़ है और जो कलिमात तवाज़ोअ़ के लिये कहे जाएं वोह तवाज़ोअ़ करने वाले के उ़लुव्वे मन्सब की दलील होते हैं, छोटों का उन कलिमात को उस की शान में कहना या इस से बराबरी ढूंडना तर्के अदब और गुस्ताख़ी होता है, तो किसी उम्मती को रवा (जाइज़) नहीं कि वोह हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मुमासिल होने का दा'वा करे। येह भी मल्हूज़ रहना चाहिये कि आप की बशरिय्यत भी सब से आ'ला है हमारी बशरिय्यत को इस से कुछ भी निस्बत नहीं। **13 :** उस पर ईमान लाओ उस की इत़ाअ़त इख़्तियार करो उस की राह से न फिरो **14 :** अपने फ़सादे अ़क़ीदा व अ़मल की। **15 :** येह मन्ए ज़कात से ख़ौफ़ दिलाने के लिये फ़रमाया गया ताकि मा'लूम हो कि ज़कात को मन्अ़ करना ऐसा बुरा है कि क़ुरआने करीम में मुश्रिकीन के औसाफ़ में ज़िक्र किया गया और इस की वज्ह येह है कि इन्सान को माल बहुत प्यारा होता है तो माल का राहे ख़ुदा में ख़र्च कर डालना उस के सबात व इस्तिक़्लाल और सिद्क़ व इख़्लासे निय्यत की क़वी दलील है और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि ज़कात से मुराद है तौह़ीद का मो'तक़िद होना और "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" कहना इस तक़्दीर पर मा'ना येह होंगे कि जो तौह़ीद का इक़्रार कर के अपने नफ़्सों को शिर्क से बाज़ नहीं रखते और क़तादा ने इस के मा'ना येह लिये हैं कि जो लोग ज़कात को वाजिब नहीं जानते। इस के इलावा और भी अक़्वाल हैं। **16 :** कि मरने के बा'द उठने और जज़ा के मिलने के क़ाइल नहीं। **17 :** जो मुन्क़तअ़ न होगा। येह भी कहा गया है कि आयत बीमारों अपाहजों और बूढ़ों के ह़क़ में नाज़िल हुई जो अ़मल व त़ाअ़त के क़ाबिल न रहें उन्हें वोही अज्र मिलेगा जो तन्दुरुस्ती में अ़मल करते थे। बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस है कि जब बन्दा कोई अ़मल करता है और किसी मरज़ या सफ़र के बाइस वोह आ़मिल उस अ़मल से मजबूर हो जाता है तो तन्दुरुस्ती और इक़ामत की ह़ालत में जो करता था वैसा ही उस के लिये लिखा जाता है। **18 :** उस की ऐसी क़ुदरते कामिला है और चाहता तो एक लम्ह़े से भी कम में बना देता। **19 :** या'नी शरीक। **20 :** और वोही इबादत का मुस्तह़िक़ है, उस के सिवा कोई इबादत का मुस्तह़िक़ नहीं, सब उस के ममलूक व मख़्लूक़ हैं। इस के बा'द फिर उस की क़ुदरत का बयान फ़रमाया जाता है। **21 :** या'नी ज़मीन में **22 :** पहाड़ों के। **23 :** दरिया और नहरें और दरख़्त व फल और क़िस्म क़िस्म के हैवानात वग़ैरा पैदा कर के। **24 :** या'नी दो दिन ज़मीन की पैदाइश और दो दिन में येह सब। **25 :** या'नी बुख़ार बुलन्द होने वाला।

www.dawateislami.net

لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ؕ قَالَتَاۤ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ﴿۱۱﴾

से और ज़मीन से फ़रमाया कि दोनों हाज़िर हो ख़ुशी से चाहे नाख़ुशी से दोनों ने अर्ज़ की कि हम रग़बत के साथ हाज़िर हुए

فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ؕ

तो उन्हें पूरे सात आस्मान कर दिया दो दिन में[26] और हर आस्मान में उसी के काम के अह़काम भेजे[27]

وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖۗ وَحِفْظًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ

और हम ने नीचे के आस्मान को[28] चराग़ों से आरास्ता किया[29] और निगहबानी के लिये[30] येह उस इ़ज़्ज़त वाले इ़ल्म वाले का ठहराया

الْعَلِيْمِ ﴿۱۲﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ

हुवा है फिर अगर वोह मुंह फेरें[31] तो तुम फ़रमाओ कि मैं तुम्हें डराता हूं एक कड़क से जैसी कड़क आ़द

وَّثَمُوْدَ ﴿۱۳﴾ؕ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ

और समूद पर आई थी[32] जब रसूल उन के आगे पीछे फिरते थे[33]

اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَاۤ

कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो बोले[34] हमारा रब चाहता तो फ़िरिश्ते उतारता[35] तो जो कुछ

اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۴﴾ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ

तुम ले कर भेजे गए हम उसे नहीं मानते[36] तो वोह जो आ़द थे उन्हों ने ज़मीन में नाह़क़ तकब्बुर किया[37]

26 : येह कुल छ[6] दिन हुए इन में सब से पिछला जुमुआ़ है। **27 :** वहां के रहने वालों को त़ाआ़त व इ़बादात व अम्र व नही के। **28 :** जो ज़मीन से क़रीब है। **29 :** या'नी रोशन सितारों से। **30 :** शयात़ीने मुस्तरिक़ा (चोरी छुपे आस्मानों की ख़बरें सुनने वाले शयात़ीन) से। **31 :** या'नी अगर येह मुशरिकीन इस बयान के बा'द भी ईमान लाने से ए'राज़ करें **32 :** या'नी अ़ज़ाबे मोहलिक से, जैसा उन पर आया था। **33 :** या'नी क़ौमे आ़द व समूद के रसूल हर त़रफ़ से आते थे और उन की हिदायत की हर तदबीर अ़मल में लाते थे और उन्हें हर त़रह़ नसीह़त करते थे **34 :** उन की क़ौम के काफ़िर उन के जवाब में कि **35 :** बजाए तुम्हारे, तुम तो हमारी मिस्ल आदमी हो। **36 :** येह ख़ित़ाब उन का ह़ज़रते हूद और ह़ज़रते सालेह़ और तमाम अम्बिया से था जिन्हों ने ईमान की दा'वत दी। इमाम बग़वी ने ब इस्नादे सा'लबी ह़ज़रते जाबिर से रिवायत की, कि जमाअ़ते क़ुरैश ने जिन में अबू जह्ल वग़ैरा सरदार भी थे येह तज्वीज़ किया कि कोई ऐसा शख़्स जो शे'र, सेह़र, कहानत में माहिर हो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से कलाम करने के लिये भेजा जाए, चुनान्चे उ़त्बा बिन रबीआ़ का इन्तिख़ाब हुवा, उ़त्बा ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से आ कर कहा कि आप बेहतर हैं या हाशिम, आप बेहतर हैं या अ़ब्दुल मुत्तलिब, आप बेहतर हैं या अ़ब्दुल्लाह, आप क्यूं हमारे मा'बूदों को बुरा कहते हैं, क्यूं हमारे बाप दादा को गुमराह बताते हैं, हुकूमत का शौक़ हो तो हम आप को बादशाह मान लें आप के फरेरे उड़ाएं (झन्डे लहराएं), औ़रतों का शौक़ हो तो क़ुरैश की जिन लड़कियों में से आप पसन्द करें हम दस आप के अ़क़्द में दें, माल की ख़्वाहिश हो तो इतना जम्अ़ कर दें जो आप की नस्लों से भी बच रहे। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم येह तमाम गुफ़्तगू ख़ामोश सुनते रहे, जब उ़त्बा अपनी तक़रीर कर के ख़ामोश हुवा तो हुज़ूरे अन्वर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने येही सूरत "حٰمٓ السجدہ" पढ़ी, जब आप आयत "فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ" (फिर अगर वोह मुंह फेरें तो तुम फ़रमाओ कि मैं तुम्हें डराता हूं एक कड़क से जैसी कड़क आ़द और समूद पर आई थी) पर पहुंचे तो उ़त्बा ने जल्दी से अपना हाथ हुज़ूर के दहन मुबारक पर रख दिया और आप को रिश्ता व क़राबत के वासित़े से क़सम दिलाई और डर कर अपने घर भाग गया। जब क़ुरैश उस के मकान पर पहुंचे तो उस ने तमाम वाक़िआ़ बयान कर के कहा कि ख़ुदा की क़सम ! मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

www.dawateislami.net

وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ؕ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِیْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ

और बोले हम से ज़ियादा किस का ज़ोर और क्या उन्हों ने न जाना कि अल्लाह जिस ने उन्हें बनाया उन से

مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿١٥﴾ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا

ज़ियादा क़वी है और हमारी आयतों का इन्कार करते थे तो हम ने उन पर एक आंधी भेजी सख़्त

صَرْصَرًا فِیْۤ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْیِ فِی الْحَيٰوةِ

गरज की[38] उन की शामत के दिनों में कि हम उन्हें रुस्वाई का अ़ज़ाब चखाएं दुन्या की

الدُّنْيَا ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰی وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٦﴾ وَاَمَّا ثَمُوْدُ

ज़िन्दगी में और बेशक आख़िरत के अ़ज़ाब में सब से बड़ी रुस्वाई है और उन की मदद न होगी और रहे समूद

فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰی عَلَی الْهُدٰی فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ

उन्हें हम ने राह दिखाई[39] तो उन्हों ने सूझने पर अन्धे होने को पसन्द किया[40] तो उन्हें ज़िल्लत के अ़ज़ाब की कड़क

الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٧﴾ ج وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿١٨﴾ ع ٢/١٠/١٦

ने आ लिया[41] सज़ा उन के किये की[42] और हम ने[43] उन्हें बचा लिया जो ईमान लाए[44] और डरते थे[45]

وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ اِلَی النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٩﴾ حَتّٰۤی اِذَا مَا

और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन[46] आग की त़रफ़ हांके जाएंगे तो उन के अगलों को रोकेंगे यहां तक कि

جَآءُوْهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا

पिछले आ मिलें[47] यहां तक कि जब वहां पहुंचेंगे उन के कान और उन की आंखें और उन के चमड़े सब उन पर उन के किये की

يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ؕ قَالُوْۤا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ

गवाही देंगे[48] और वोह अपनी खालों से कहेंगे तुम ने हम पर क्यूं गवाही दी वोह कहेंगी हमें अल्लाह ने बुलवाया

जो कहते हैं न वोह शे'र है न सेहूर है न कहानत, मैं इन चीज़ों को ख़ूब जानता हूं। मैं ने उन का कलाम सुना, जब उन्हों ने आयत "فَاِنْ اَعْرَضُوْا" पढ़ी तो मैं ने उन के दहने मुबारक पर हाथ रख दिया और उन्हें क़सम दी कि बस करें। और तुम जानते ही हो वोह जो कुछ फ़रमाते हैं वोही हो जाता है, उन की बात कभी झूटी नहीं होती, मुझे अन्देशा हो गया कि कहीं तुम पर अ़ज़ाब नाज़िल न होने लगे। **37 :** क़ौमे आ़द के लोग बड़े क़वी और शहज़ोर थे जब ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से डराया तो उन्हों ने कहा कि हम अपनी त़ाक़त से अ़ज़ाब को हटा सकते हैं। **38 :** निहायत ठन्डी बिग़ैर बारिश के। **39 :** और नेकी और बदी के त़रीक़े उन पर ज़ाहिर फ़रमाए। **40 :** और ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र इख़्तियार किया। **41 :** और होलनाक आवाज़ के अ़ज़ाब से हलाक किये गए। **42 :** या'नी उन के शिर्क व तक्ज़ीबे पैग़म्बर और मआ़सी की। **43 :** साइक़ा (कड़क) के उस ज़िल्लत वाले अ़ज़ाब से **44 :** ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام पर **45 :** शिर्क और आ'माले ख़बीसा से। **46 :** या'नी कुफ़्फ़ार अगले और पिछले **47 :** फिर सब को दोज़ख़ में हांक दिया जाएगा। **48 :** आ'ज़ा ब हुक्मे इलाही बोल उठेंगे और जो जो अ़मल किये थे बता देंगे।

www.dawateislami.net

الَّذِیْۤ اَنْطَقَ كُلَّ شَیْءٍ وَّ هُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۲۱﴾
जिस ने हर चीज़ को गोयाई बख़्शी और उस ने तुम्हें पहली बार बनाया और उसी की त़रफ़ तुम्हें फिरना है

وَ مَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ یَّشْهَدَ عَلَیْكُمْ سَمْعُكُمْ وَ لَاۤ اَبْصَارُكُمْ وَ لَا
और तुम[49] उस से कहां छुप कर जाते कि तुम पर गवाही दें तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें और

جُلُوْدُكُمْ وَ لٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ لَا یَعْلَمُ كَثِیْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۲﴾ وَ
तुम्हारी खालें[50] लेकिन तुम तो येह समझे बैठे थे कि अल्लाह तुम्हारे बहुत से काम नहीं जानता[51] और

ذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِیْ ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۲۳﴾
येह है तुम्हारा वोह गुमान जो तुम ने अपने रब के साथ किया और उस ने तुम्हें हलाक कर दिया[52] तो अब रह गए हारे हुओं में

فَاِنْ یَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَ اِنْ یَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ
फिर अगर वोह सब्र करें[53] तो आग उन का ठिकाना है[54] और अगर वोह मनाना चाहें तो कोई उन का

الْمُعْتَبِیْنَ ﴿۲۴﴾ وَ قَیَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَیَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَ مَا
मनाना न माने[55] और हम ने उन पर कुछ साथी तअ़य्युनात किये[56] उन्हों ने उन्हें भला कर दिखाया जो उन के आगे है[57] और जो

خَلْفَهُمْ وَ حَقَّ عَلَیْهِمُ الْقَوْلُ فِیْۤ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ
उन के पीछे[58] और उन पर बात पूरी हुई[59] उन गुरौहों के साथ जो उन से पहले गुज़र चुके जिन्न

وَ الْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِیْنَ ﴿۲۵﴾ ع وَ قَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا ع ۱۷ ۳
और आदमियों के बेशक वोह ज़ियांकार (नुक़्सान में) थे और काफ़िर बोले[60] येह क़ुरआन

لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَ الْغَوْا فِیْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ﴿۲۶﴾ فَلَنُذِیْقَنَّ الَّذِیْنَ
न सुनो और इस में बेहूदा ग़ुल (शोर) करो[61] शायद यूंही तुम ग़ालिब आओ[62] तो बेशक ज़रूर हम

49 : गुनाह करते वक़्त 50 : तुम्हें तो इस का गुमान भी न था बल्कि तुम तो बअ़्स व जज़ा के सिरे ही से क़ाइल न थे। 51 : जो तुम छुपा कर करते हो। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार येह कहते थे कि अल्लाह तआ़ला ज़ाहिर की बातें जानता है और जो हमारे दिलों में है उस को नहीं जानता। (مَعَاذَ اللّٰه) 52 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि तुम्हें जहन्नम में डाल दिया। 53 : अ़ज़ाब पर 54 : येह सब्र भी कारआमद नहीं। 55 : या'नी ह़क़ तआ़ला उन से राज़ी न हो चाहे कितना ही मिन्नत करें किसी त़रह़ अ़ज़ाब से रिहाई नहीं। 56 : शयात़ीन में से। 57 : या'नी दुन्या की ज़ैबो ज़ीनत और ख़्वाहिशाते नफ़्स का इत्तिबाअ़। 58 : या'नी अम्रे आख़िरत। येह वस्वसा डाल कर कि न मरने के बा'द उठना है न ह़िसाब न अ़ज़ाब, चैन ही चैन है। 59 : अ़ज़ाब की। 60 : या'नी मुश्रिकीने क़ुरैश। 61 : और शोर मचाओ। कुफ़्फ़ार एक दूसरे से कहते थे कि जब मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم) क़ुरआन शरीफ़ पढ़ें तो ज़ोर ज़ोर से शोर करो ख़ूब चिल्लाओ ऊंची ऊंची आवाज़ें निकाल कर चीख़ो बे मा'ना कलिमात से शोर करो तालियां और सीटियां बजाओ ताकि कोई क़ुरआन न सुनने पाए और रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم परेशान हों। 62 : और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

كَفَرُوۡا عَذَابًا شَدِيۡدًا ۙ وَّلَنَجۡزِيَنَّهُمۡ اَسۡوَاَ الَّذِىۡ كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ﴿٢٧﴾

काफ़िरों को सख़्त अज़ाब चखाएंगे और बेशक हम उन के बुरे से बुरे काम का उन्हें बदला देंगे[63]

ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعۡدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ لَهُمۡ فِيۡهَا دَارُ الۡخُلۡدِ ؕ جَزَآءًۢ بِمَا

येह है अल्लाह के दुश्मनों का बदला आग इस में उन्हें हमेशा रहना है सज़ा इस

كَانُوۡا بِاٰيٰتِنَا يَجۡحَدُوۡنَ ﴿٢٨﴾ وَقَالَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا رَبَّنَاۤ اَرِنَا الَّذَيۡنِ

की कि हमारी आयतों का इन्कार करते थे और काफ़िर बोले[64] ऐ हमारे रब हमें दिखा वोह

اَضَلّٰنَا مِنَ الۡجِنِّ وَالۡاِنۡسِ نَجۡعَلۡهُمَا تَحۡتَ اَقۡدَامِنَا لِيَكُوۡنَا مِنَ

दोनों जिन्न और आदमी जिन्हों ने हमें गुमराह किया[65] कि हम उन्हें अपने पाउं तले डालें[66] कि वोह हर नीचे से

الۡاَسۡفَلِيۡنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ قَالُوۡا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسۡتَقَامُوۡا تَتَنَزَّلُ

नीचे रहें[67] बेशक वोह जिन्हों ने कहा हमारा रब अल्लाह है फिर इस पर क़ाइम रहे[68] उन पर

عَلَيۡهِمُ الۡمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوۡا وَلَا تَحۡزَنُوۡا وَاَبۡشِرُوۡا بِالۡجَنَّةِ الَّتِىۡ

फ़िरिश्ते उतरते हैं[69] कि न डरो[70] और न ग़म करो[71] और खुश हो उस जन्नत पर जिस का

كُنۡتُمۡ تُوۡعَدُوۡنَ ﴿٣٠﴾ نَحۡنُ اَوۡلِيٰٓـؤُكُمۡ فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا وَفِى الۡاٰخِرَةِ ۚ

तुम्हें वा'दा दिया जाता था[72] हम तुम्हारे दोस्त हैं दुन्या की ज़िन्दगी में[73] और आख़िरत में[74]

وَلَكُمۡ فِيۡهَا مَا تَشۡتَهِىۡۤ اَنۡفُسُكُمۡ وَلَكُمۡ فِيۡهَا مَا تَدَّعُوۡنَ ﴿٣١﴾ؕ نُزُلًا مِّنۡ

और तुम्हारे लिये है इस में[75] जो तुम्हारा जी चाहे और तुम्हारे लिये इस में जो मांगो मेहमानी बख़्शने

क़िराअत मौक़ूफ़ कर दें। **63 :** या'नी कुफ़्र का बदला सख़्त अज़ाब। **64 :** जहन्नम में। **65 :** या'नी हमें वोह दोनों शैतान दिखा जिन्नी भी और इन्सी भी। शैतान दो क़िस्म के होते हैं एक जिन्नों में से एक इन्सानों में से जैसा कि कुरआने पाक में है : "شَيٰطِيۡنَ الۡاِنۡسِ وَالۡجِنِّ" (आदमियों और जिन्नों में के शैतान) जहन्नम में कुफ़्फ़ार इन दोनों के देखने की ख़्वाहिश करेंगे। **66 :** आग में **67 :** दरके अस्फ़ल (दोज़ख़ के सब से निचले तबक़े) में हम से ज़ियादा सख़्त अज़ाब में। **68 :** हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ से दरयाफ़्त किया गया इस्तिक़ामत क्या है? फ़रमाया : येह कि अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न करे। हज़रते उमर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : इस्तिक़ामत येह है कि अम्र व नही पर क़ाइम रहे। हज़रते उस्माने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : इस्तिक़ामत येह है कि अमल में इख़्लास करे। हज़रते अली رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : इस्तिक़ामत येह है कि फ़राइज़ अदा करे और इस्तिक़ामत के मा'ना में येह भी कहा गया है कि अल्लाह तआला के अम्र को बजा लाए और मआसी से बचे। **69 :** मौत के वक़्त या वोह जब क़ब्रों से उठेंगे और येह भी कहा गया है कि मोमिन को तीन बार बिशारत दी जाती है **एक** वक़्ते मौत। **दूसरे** क़ब्र में। **तीसरे** क़ब्रों से उठने के वक़्त। **70 :** मौत से और आख़िरत में पेश आने वाले हालात से। **71 :** अहल व औलाद के छूटने का या गुनाहों का। **72 :** और फ़िरिश्ते कहेंगे : **73 :** तुम्हारी हिफ़ाज़त करते थे **74 :** तुम्हारे साथ रहेंगे और जब तक तुम जन्नत में दाख़िल हो तुम से जुदा न होंगे। **75 :** या'नी जन्नत में वोह करामत और ने'मत व लज़्ज़त।

غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ﴿٣٢﴾ ع وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا ع ١٨/٧

वाले मेह्रबान की त़रफ़ से और उस से ज़ियादा किस की बात अच्छी जो **अल्लाह** की त़रफ़ बुलाए[76] और नेकी करे[77]

وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ط

और कहे मैं मुसल्मान हूं[78] और नेकी और बदी बराबर न हो जाएंगी ऐ सुनने वाले

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ

बुराई को भलाई से टाल[79] जभी वोह कि तुझ में और उस में दुश्मनी थी ऐसा हो जाएगा जैसा कि

وَلِيٌّ حَمِيْمٌ ﴿٣٤﴾ وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ج وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ

गहरा दोस्त[80] और येह दौलत[81] नहीं मिलती मगर साबिरों को और इसे नहीं पाता मगर बड़े

عَظِيْمٍ ﴿٣٥﴾ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ط اِنَّهٗ هُوَ

नसीब वाला और अगर तुझे शैत़ान का कोई कोंचा (वार) पहुंचे[82] तो **अल्लाह** की पनाह मांग[83] बेशक वोही

السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٦﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ط

सुनता जानता है और उस की निशानियों में से हैं रात और दिन और सूरज और चांद[84]

لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ

सज्दा न करो सूरज को और न चांद को[85] और **अल्लाह** को सज्दा करो जिस ने उन्हें पैदा किया[86] अगर

76 : उस की तौह़ीद व इ़बादत की त़रफ़। कहा गया है कि इस दा'वत देने वाले से मुराद हुज़ूर सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हैं और येह भी कहा गया है कि वोह मोमिन मुराद है जिस ने नबी عَلَيْهِ السَّلَام की दा'वत को क़बूल किया और दूसरों को नेकी की दा'वत दी। **77 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने फ़रमाया : मेरे नज़्दीक येह आयत मुअज़्ज़िनों के ह़क़ में नाज़िल हुई और एक क़ौल येह भी है कि जो कोई किसी त़रीक़े पर भी **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ दा'वत दे वोह इस में दाख़िल है। दा'वत इलल्लाह के कई मर्तबे हैं **अव्वल** दा'वते अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मो'जिज़ात और हुजज व बराहीन व सैफ़ के साथ, येह मर्तबा अम्बिया ही के साथ ख़ास है। **दुवुम** दा'वते उ़लमा, फ़क़त़ हुजज व बराहीन के साथ और उ़लमा कई त़रह़ के हैं : **एक आ़लिम बिल्लाह**। **दूसरे आ़लिम बि सिफ़ातिल्लाह**। **तीसरे आ़लिम बि अह़कामिल्लाह**। **मर्तबए सिवुम** दा'वते मुजाहिदीन है, येह कुफ़्फ़ार को सैफ़ के साथ होती है यहां तक कि वोह दीन में दाख़िल हों और त़ाअ़त क़बूल कर लें। **मर्तबए चहारुम** मुअज़्ज़िनीन की दा'वत नमाज़ के लिये। अ़मले सालेह़ की दो क़िस्में हैं : **एक** वोह जो क़ल्ब से हो वोह मा'रिफ़ते इलाही है। **दूसरे** जो आ'ज़ा से हो वोह तमाम त़ाआ़त हैं। **78 :** और येह फ़क़त़ क़ौल न हो बल्कि दीने इस्लाम का दिल से मो'तक़िद हो कर कहे कि सच्चा कहना येही है। **79 :** मसलन ग़ुस्से को सब्र से और जह्ल को ह़िल्म से और बद सुलूकी को अ़फ़्व से कि अगर तेरे साथ कोई बुराई करे तो तू मुआ़फ़ कर। **80 :** या'नी इस ख़स्लत का नतीजा येह होगा कि दुश्मन दोस्तों की त़रह़ मह़ब्बत करने लगेंगे। **शाने नुज़ूल :** कहा गया है कि येह आयत अबू सुफ़्यान के ह़क़ में नाज़िल हुई कि बा वुजूद उन की शिद्दते अ़दावत के नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन के साथ सुलूके नेक किया, उन की साह़िब ज़ादी को अपनी ज़ौजिय्यत का शरफ़ अ़त़ा फ़रमाया, इस का नतीजा येह हुवा कि वोह सादिक़ुल मह़ब्बत जां निसार हो गए। **81 :** या'नी बदियों को नेकियों से दफ़्अ़ करने की ख़स्लत **82 :** या'नी शैत़ान तुझ को बुराइयों पर उभारे और इस ख़स्लते नेक से और इस के इ़लावा और नेकियों से मुन्ह़रिफ़ करे **83 :** उस के शर से और अपनी नेकियों पर क़ाइम रह, शैत़ान की राह न इख़्तियार कर **अल्लाह** तआ़ला तेरी मदद फ़रमाएगा। **84 :** जो उस की क़ुदरत व ह़िक्मत और उस की रबूबिय्यत व वह़दानिय्यत पर दलालत करते हैं। **85 :** क्यूं कि वोह मख़्लूक़ हैं और हुक्मे ख़ालिक़ से मुसख़्ख़र हैं और जो ऐसा हो मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत नहीं हो सकता। **86 :** वोही सज्दे और इ़बादत का मुस्तह़िक़ है।

www.dawateislami.net

كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۳۷﴾ فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ

तुम उस के बन्दे हो तो अगर येह तकब्बुर करें[87] तो वोह जो तुम्हारे रब के पास हैं[88] रात दिन

السجدة ١١

لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُوْنَ ﴿۳۸﴾ السجدة وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ

उस की पाकी बोलते हैं और उक्ताते नहीं और उस की निशानियों से है कि तू ज़मीन को देखे

خَاشِعَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِيْۤ اَحْيَاهَا

बे क़द्र पड़ी[89] फिर हम ने जब उस पर पानी उतारा[90] तरो ताज़ा हुई और बढ़ चली बेशक जिस ने उसे जिलाया ज़रूर

لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۳۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْۤ

मुर्दे जिलाए (ज़िन्दा करे)गा बेशक वोह सब कुछ कर सकता है बेशक वोह जो हमारी आयतों में टेढ़े

اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ؕ اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْۤ اٰمِنًا

चलते हैं[91] हम से छुपे नहीं[92] तो क्या जो आग में डाला जाएगा[93] वोह भला या जो क़ियामत में अमान से

يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۴۰﴾ اِنَّ

आएगा[94] जो जी में आए करो बेशक वोह तुम्हारे काम देख रहा है बेशक

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ﴿۴۱﴾ ۙ لَّا يَاْتِيْهِ

जो ज़िक्र से मुन्किर हुए[95] जब वोह उन के पास आया उन की ख़राबी का कुछ हाल न पूछ और बेशक वोह इ़ज़्ज़त वाली किताब है[96] बातिल को उस की त़रफ़

الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ﴿۴۲﴾

राह नहीं न उस के आगे से न उस के पीछे से[97] उतारा हुवा है हिक्मत वाले सब ख़ूबियों सराहे का

مَا يُقَالُ لَكَ اِلَّا مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ

तुम से न फ़रमाया जाएगा[98] मगर वोही जो तुम से अगले रसूलों को फ़रमाया गया कि बेशक तुम्हारा रब बख़्शिश

مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۴۳﴾ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا

वाला[99] और दर्दनाक अ़ज़ाब वाला है[100] और अगर हम उसे अ़जमी ज़बान का क़ुरआन करते[101] तो ज़रूर कहते कि इस की

87 : सिर्फ़ **अल्लाह** को सज्दा करने से 88 : मलाएका वोह 89 : सूखी कि उस में सब्ज़े का नामो निशान नहीं। 90 : बारिश नाज़िल की। 91 : और तावीले आयात में सिह़्ह़त व इस्तिक़ामत से उ़दूल व इन्ह़िराफ़ करते हैं। 92 : हम उन्हें इस की सज़ा देंगे। 93 : या'नी काफ़िर मुल्ह़िद। 94 : मोमिन सादिक़ुल अ़क़ीदा, बेशक वोही बेहतर है। 95 : या'नी क़ुरआने करीम से और उन्हों ने इस में त़ा'न किये। 96 : बे अ़दील व बे नज़ीर जिस की एक सूरत का मिस्ल बनाने से तमाम ख़ल्क़ आ़जिज़ है। 97 : या'नी किसी त़रह़ और किसी जिहत से भी बातिल

www.dawateislami.net

فُصِّلَتْ اٰیٰتُهٗ ؕ ءَاَعْجَمِیٌّ وَّ عَرَبِیٌّ ؕ قُلْ هُوَ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا هُدًی وَّ قرء حفص بتسهيل الهمزة الثانية ١٢

आयतें क्यूं न खोली गईं[102] क्या किताब अ़जमी और नबी अ़रबी[103] तुम फ़रमाओ वोह[104] ईमान वालों के लिये हिदायत और

شِفَآءٌ ؕ وَ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ فِیْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّ هُوَ عَلَیْهِمْ عَمًی ؕ

शिफ़ा है[105] और वोह जो ईमान नहीं लाते उन के कानों में टेंट (रूई) है[106] और वोह उन पर अन्धा पन है[107]

اُولٰٓىٕكَ یُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِیْدٍ ﴿۴۴﴾ ع وَ لَقَدْ اٰتَیْنَا مُوْسَی الْكِتٰبَ ع ٥ ٤

गोया वोह दूर जगह से पुकारे जाते हैं[108] और बेशक हम ने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई[109]

فَاخْتُلِفَ فِیْهِ ؕ وَ لَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِیَ بَیْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّهُمْ

तो उस में इख़्तिलाफ़ किया गया[110] और अगर एक बात तुम्हारे रब की त़रफ़ से गुज़र न चुकी होती[111] तो जभी उन का फ़ैसला हो जाता[112] और बेशक वोह[113]

لَفِیْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِیْبٍ ﴿۴۵﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ج وَ مَنْ اَسَآءَ

ज़रूर उस की त़रफ़ से एक धोका डालने वाले शक में हैं जो नेकी करे वोह अपने भले को और जो बुराई करे

فَعَلَیْهَا ؕ وَ مَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِیْدِ ﴿۴۶﴾

तो अपने बुरे को और तुम्हारा रब बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता

उस तक राह नहीं पा सकता, वोह तग़्यीर व तब्दील व कमी व ज़ियादती से महफ़ूज़ है, शैत़ान उस में तसर्रुफ़ की क़ुदरत नहीं रखता। **98 :** **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से **99 :** अपने अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के लिये और उन पर ईमान लाने वालों के लिये **100 :** अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के दुश्मनों और तक्ज़ीब करने वालों के लिये। **101 :** जैसा कि येह कुफ़्फ़ार ब त़रीक़े ए'तिराज़ कहते हैं कि येह क़ुरआन अ़जमी ज़बान में क्यूं न उतरा **102 :** और ज़बाने अ़रबी में बयान न की गईं कि हम समझ सकते। **103 :** या'नी किताब नबी की ज़बान के ख़िलाफ़ क्यूं उतरी ? ह़ासिल येह है कि क़ुरआने पाक अ़जमी ज़बान में होता तो येह काफ़िर ए'तिराज़ करते अ़रबी में आया तो मो'तरिज़ हुए बात येह है कि خُوئے بد را بہانہ بسیار (बद निय्यत के लिये बहाने बहुत)। ऐसे ए'तिराज़ त़ालिबे ह़क़ की शान के लाइक़ नहीं। **104 :** क़ुरआन शरीफ़ **105 :** कि ह़क़ की राह बताता है, गुमराही से बचाता है, जहल व शक वग़ैरा क़ल्बी अमराज़ से शिफ़ा देता है और जिस्मानी अमराज़ के लिये भी इस का पढ़ कर दम करना दफ़्ए मरज़ के लिये मुअस्सिर है। **106 :** कि वोह क़ुरआने पाक के सुनने की ने'मत से महरूम हैं। **107 :** कि शुकूको शुबुहात की ज़ुल्मतों में गिरिफ़्तार हैं। **108 :** या'नी वोह अपने अ़दमे क़बूल से इस ह़ालत को पहुंच गए हैं जैसा कि किसी को दूर से पुकारा जाए तो वोह पुकारने वाले की बात न सुने न समझे। **109 :** या'नी तौरैत मुक़द्दस **110 :** बा'ज़ों ने उस को माना और बा'ज़ों ने न माना। बा'ज़ों ने उस की तस्दीक़ की और बा'ज़ों ने तक्ज़ीब। **111 :** या'नी ह़िसाब व जज़ा को रोज़े क़ियामत तक मुअख़्ख़र न फ़रमा दिया होता **112 :** और दुन्या ही में उन्हें इस की सज़ा दे दी जाती। **113 :** या'नी किताबे इलाही की तक्ज़ीब करने वाले।

www.dawateislami.net

اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ؕ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرٰتٍ مِّنْ اَكْمَامِهَا وَمَا

क़ियामत के इल्म का उसी पर ह़वाला है[114] और कोई फल अपने ग़िलाफ़ से नहीं निकलता और न

تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ اَيْنَ شُرَكَآءِيْ ۙ

किसी मादा को पेट रहे और न जने मगर उस के इल्म से[115] और जिस दिन उन्हें निदा फ़रमाएगा[116] कहां हैं मेरे शरीक[117]

قَالُوْۤا اٰذَنّٰكَ ۙ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيْدٍ ﴿۴۷﴾ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَدْعُوْنَ

कहेंगे हम तुझ से कह चुके कि हम में कोई गवाह नहीं[118] और गुम गया उन से जिसे पहले

مِنْ قَبْلُ وَظَنُّوْا مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿۴۸﴾ لَا يَسْـَٔمُ الْاِنْسَانُ مِنْ دُعَآءِ

पूजते थे[119] और समझ लिये कि उन्हें कहीं[120] भागने की जगह नहीं आदमी भलाई मांगने से नहीं

الْخَيْرِ ۫ وَاِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَـُٔوْسٌ قَنُوْطٌ ﴿۴۹﴾ وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا

उक्ताता[121] और कोई बुराई पहुंचे[122] तो ना उम्मीद आस टूटा[123] और अगर हम उसे कुछ अपनी रह़मत का मज़ा दें[124]

مِنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَا لِيْ ۙ وَمَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ

उस तक्लीफ़ के बा'द जो उसे पहुंची थी तो कहेगा येह तो मेरी है[125] और मेरे गुमान में क़ियामत क़ाइम न होगी

وَّلَئِنْ رُّجِعْتُ اِلٰى رَبِّيْۤ اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِيْنَ

और अगर[126] मैं रब की त़रफ़ लौटाया भी गया तो ज़रूर मेरे लिये उस के पास भी ख़ूबी ही है[127] तो ज़रूर हम बता देंगे

114 : तो जिस से वक़्ते क़ियामत दरयाफ़्त किया जाए उस को लाज़िम है कि कहे **अल्लाह** तआ़ला जानने वाला है। **115 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला फल के ग़िलाफ़ से बरआमद होने से क़ब्ल उस के अह़वाल को जानता है और मादा के ह़म्ल को और उस की साअ़तों को और वज़्अ़ (पैदाइश) के वक़्त को और उस के नाक़िस व ग़ैर नाक़िस और अच्छे और बुरे और नर व मादा होने को सब को जानता है इस का इल्म भी उसी की त़रफ़ ह़वाला करना चाहिये। अगर येह ए'तिराज़ किया जाए कि औलियाए किराम अस्ह़ाबे कश्फ़ बसा अवक़ात इन उमूर की ख़बरें देते हैं और वोह सह़ीह़ वाक़ेअ़ होती हैं बल्कि कभी मुनज्जिम (सितारों का इल्म जानने वाले) और काहिन भी ख़बरें देते हैं। इस का जवाब येह है कि नुजूमियों और काहिनों की ख़बरें तो मह़ज़ अट्कल की बातें हैं जो अक्सर व बेश्तर ग़लत़ हो जाया करती हैं वोह इल्म ही नहीं है बे ह़क़ीक़त बातें हैं और औलिया की ख़बरें बेशक सह़ीह़ होती हैं और वोह इल्म से फ़रमाते हैं और येह इल्म उन का ज़ाती नहीं **अल्लाह** तआ़ला का अ़त़ा फ़रमाया हुवा है तो ह़क़ीक़त में येह उसी का इल्म हुवा ग़ैर का नहीं। (خازن) **116 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला मुश्रिकीन से फ़रमाएगा कि **117 :** जो तुम ने दुन्या में घड़ रखे थे जिन्हें तुम पूजा करते थे, इस के जवाब में मुश्रिकीन **118 :** जो आज येह बात़िल गवाही दे कि तेरा कोई शरीक है या'नी हम सब मोमिन मुवह़्ह़िद हैं। येह मुश्रिकीन अ़ज़ाब देख कर कहेंगे और अपने बुतों से बरी होने का इज़्हार करेंगे। **119 :** दुन्या में या'नी बुत। **120 :** अ़ज़ाबे इलाही से बचने और **121 :** हमेशा **अल्लाह** तआ़ला से माल और तवंगरी व तन्दुरुस्ती मांगता रहता है। **122 :** या'नी कोई सख़्ती व बला व मआ़श की तंगी। **123 :** **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो रह़मत से मायूस हो जाता है। येह और इस के बा'द जो ज़िक्र फ़रमाया जाता है वोह काफ़िर का ह़ाल है और मोमिन **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत से मायूस नहीं होते ''لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ'' (**अल्लाह** की रह़मत से मायूस नहीं होते मगर काफ़िर लोग) **124 :** सिह़्ह़त व सलामत व मालो दौलत अ़त़ा फ़रमा कर। **125 :** ख़ालिस मेरा ह़क़ है, मैं अपने अ़मल से इस का मुस्तह़िक़ हूं। **126 :** बिलफ़र्ज़ जैसा कि मुसलमान कहते हैं : **127 :** या'नी वहां भी मेरे लिये दुन्या की त़रह़ ऐशो राह़त व इ़ज़्ज़तो करामत है।

www.dawateislami.net

كَفَرُوْا بِمَا عَمِلُوْا ۟ وَ لَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿۵۰﴾ وَ اِذَاۤ اَنْعَمْنَا عَلَى

काफ़िरों को जो उन्हों ने किया[128] और ज़रूर उन्हें गाढ़ा अ़ज़ाब चखाएंगे[129] और जब हम आदमी पर एह़सान

الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَ نَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوْ دُعَآءٍ عَرِيْضٍ ﴿۵۱﴾

करते हैं तो मुंह फेर लेता है[130] और अपनी त़रफ़ दूर हट जाता है[131] और जब उसे तक्लीफ़ पहुंचती है[132] तो चौड़ी दुआ़ वाला है[133]

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ

तुम फ़रमाओ[134] भला बताओ अगर येह क़ुरआन **अल्लाह** के पास से है[135] फिर तुम इस के मुन्किर हुए तो उस से बढ़ कर गुमराह कौन जो

فِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ﴿۵۲﴾ سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَ فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى

दूर की ज़िद में है[136] अभी हम उन्हें दिखाएंगे अपनी आयतें दुन्या भर में[137] और ख़ुद उन के आपे में[138] यहां तक कि

يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ ؕ اَوَ لَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿۵۳﴾

उन पर खुल जाए कि बेशक वोह ह़क़ है[139] क्या तुम्हारे रब का हर चीज़ पर गवाह होना काफ़ी नहीं

اَلَاۤ اِنَّهُمْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ؕ اَلَاۤ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطٌ ﴿۵۴﴾ ع

सुनो उन्हें ज़रूर अपने रब से मिलने में शक है[140] सुनो वोह हर चीज़ को मुह़ीत़ है[141]

اٰیاتھا ۵۳ | ۴۲ سُوْرَةُ الشُّوْرٰى مَكِّيَّةٌ ۶۲ | رکوعاتھا ۵

सूरए शूरा मक्किय्या है, इस में तिरपन आयतें और पांच रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

128 : या'नी उन के आ'माले क़बीह़ा और उन के आ'माल के नताइज और जिस अ़ज़ाब के वोह मुस्तह़िक़ हैं उस से उन्हें आगाह कर देंगे। **129 :** या'नी निहायत सख़्त। **130 :** और उस एह़सान का शुक्र बजा नहीं लाता और उस ने'मत पर इतराता है और ने'मत देने वाले परवर्दगार को भूल जाता है। **131 :** यादे इलाही से तकब्बुर करता है। **132 :** किसी क़िस्म की परेशानी बीमारी या नादारी वग़ैरा पेश आती है **133 :** ख़ूब दुआ़एं करता है रोता है गिड़गिड़ाता है और लगातार दुआ़एं मांगे जाता है। **134 :** ऐ मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा के कुफ़्फ़ार से **135 :** जैसा कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं और बराहीने क़त़इय्या साबित करती हैं। **136 :** ह़क़ की मुख़ालफ़त करता है। **137 :** आस्मान व ज़मीन के अक़्त़ार में, सूरज, चांद, सितारे, नबातात, ह़ैवान येह सब उस की क़ुदरत व ह़िक्मत पर दलालत करने वाले हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि इन आयात से मुराद गुज़री हुई उम्मतों की उजड़ी हुई बस्तियां हैं जिन से अम्बिया की तक्ज़ीब करने वालों का ह़ाल मा'लूम होता है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इन निशानियों से मशरिक़ो मग़रिब की वोह फ़ुतूह़ात मुराद हैं जो **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और उन के नियाज़ मन्दों को अ़न्क़रीब अ़त़ा फ़रमाने वाला है। **138 :** उन की हस्तियों में लाखों लत़ाइफ़े सन्अ़त और बे शुमार अ़जाइबे ह़िक्मत हैं, या येह मा'ना हैं कि बद्र में कुफ़्फ़ार को मग़लूब व मक़्हूर कर के ख़ुद उन के अपने अह़वाल में अपनी निशानियों का मुशाहदा करा दिया, या येह मा'ना हैं कि मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह़ फ़रमा कर उन में अपनी निशानियां ज़ाहिर कर देंगे। **139 :** या'नी इस्लाम व क़ुरआन की सच्चाई और ह़क़्क़ानिय्यत उन पर ज़ाहिर हो जाए। **140 :** क्यूं कि वोह बअ़्स व क़ियामत के क़ाइल नहीं हैं। **141 :** कोई चीज़ उस के इह़ात़ए इल्मी से बाहर नहीं और उस के मा'लूमात ग़ैर मुतनाही हैं। **1 :** सूरए शूरा जुम्हूर के नज़्दीक

www.dawateislami.net